The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के परिप्रेक्ष्य में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जितेन्द्र कुमार*
शोधार्थी शिक्षा विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जाट-पाली, महेन्द्रगढ़, हरियाणा - 123031
ई-मेल: jitendrakumaarsaini@gmail.com
सोनू कुमार चौधरी**
शोधार्थी शिक्षा विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, चेरी-मनातू, कांके, रांची, झारखंड - 835222
ई-मेल: sonu92612@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22097494

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 17-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

बुनियादी स्तर, गणित शिक्षा, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023, अनुभवात्मक अधिगम, खेल-आधारित शिक्षण, गणितीय चिंतन।

ABSTRACT

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 भारतीय विद्यालयी शिक्षा में व्यापक परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करती है। यह रूपरेखा बुनियादी स्तर (तीन से आठ वर्ष) को समग्र अधिगम की आधारशिला मानते हुए बालक-केंद्रित, अनुभवात्मक तथा खेल-आधारित शिक्षण पर विशेष बल देती है। इसी परिप्रेक्ष्य में गणित शिक्षा को केवल संख्याओं एवं गणनात्मक दक्षताओं तक सीमित न रखकर तार्किक चिंतन, प्रतिरूपों की पहचान, समस्या-समाधान, स्थानिक बोध तथा दैनिक जीवन से जुड़े अनुभवों को समझने का प्रभावी माध्यम माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के आलोक में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्यों, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षक की भूमिका, मूल्यांकन व्यवस्था तथा इसके प्रभावी क्रियान्वयन से संबंधित प्रमुख पक्षों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में गुणात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा संबंधित शैक्षिक साहित्य का दस्तावेजीय विश्लेषण किया

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षा का उद्देश्य केवल संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बालकों में प्रारम्भिक गणितीय चिंतन, जिज्ञासा, तर्क, अनुमान, वर्गीकरण, क्रमबद्धता तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में गणितीय अवधारणाओं के उपयोग की क्षमता का विकास करना है। रूपरेखा स्थानीय परिवेश, मातृभाषा, खेल, गतिविधियों, कहानियों तथा ठोस शिक्षण-सामग्री के माध्यम से गणितीय अधिगम को अर्थपूर्ण एवं आनंददायक बनाने की अनुशंसा करती है। साथ ही सतत एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन, समावेशी शिक्षण तथा प्रत्येक बालक की अधिगम गति के अनुरूप शिक्षण की आवश्यकता पर बल देती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को नई दिशा प्रदान करती है। यदि इसके सिद्धांतों एवं अनुशंसाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो बालकों में गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा तथा उनके भावी गणितीय अधिगम की सुदृढ़ आधारशिला निर्मित होगी।

भूमिका

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा आर्थिक विकास का आधार होती है। बाल्यावस्था में प्राप्त अधिगम अनुभव व्यक्ति के व्यक्तित्व, चिंतन तथा भावी अधिगम की दिशा निर्धारित करते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में बुनियादी स्तर (तीन से आठ वर्ष) को शिक्षा की आधारशिला माना गया है। इस स्तर पर बालकों के समग्र विकास के साथ-साथ भाषा, साक्षरता, संख्याज्ञान तथा प्रारम्भिक गणितीय अवधारणाओं के विकास पर विशेष बल दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268-269)। गणित शिक्षा बुनियादी स्तर पर केवल संख्याओं की पहचान अथवा जोड़-घटाव जैसी प्रक्रियाओं का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह बालकों में तर्क, अवलोकन, तुलना, वर्गीकरण, क्रमबद्धता, प्रतिरूपों की पहचान, स्थानिक बोध तथा समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 गणित को एक ऐसी मानवीय बौद्धिक गतिविधि के रूप में प्रस्तुत करती है, जो बालकों को अपने परिवेश को समझने, अनुभवों का विश्लेषण करने तथा विभिन्न परिस्थितियों में तार्किक निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268)।

रूपरेखा के अनुसार बालक स्वाभाविक रूप से अपने आसपास की वस्तुओं, घटनाओं तथा गतिविधियों के माध्यम से गणितीय अनुभव प्राप्त करते हैं। वस्तुओं की गिनती करना, आकारों की पहचान करना, खिलौनों को वर्गीकृत करना, वस्तुओं को क्रम में रखना, दूरी का अनुमान लगाना तथा दैनिक जीवन में मात्रा की तुलना करना, बुनियादी गणितीय अधिगम के स्वाभाविक उदाहरण हैं। इसलिए गणित शिक्षा को वास्तविक जीवन के अनुभवों, खेलों, कहानियों, गीतों, संवाद तथा गतिविधियों से जोड़ने की अनुशंसा की गई है, जिससे बालक बिना किसी भय के गणितीय अवधारणाओं का निर्माण कर सकें (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-278)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 इस तथ्य पर बल देती है कि गणितीय अधिगम बालकों पर आरोपित नहीं किया जा सकता, बल्कि उन्हें अन्वेषण, प्रयोग तथा संवाद के अवसर प्रदान करके विकसित किया जाना चाहिए। जब बालक स्वयं वस्तुओं का निरीक्षण करते हैं, तुलना करते हैं, प्रतिरूप खोजते हैं तथा अपने निष्कर्ष व्यक्त करते हैं, तब गणित उनके लिए अर्थपूर्ण बनता है। इस प्रकार गणित शिक्षा रटने की प्रक्रिया न होकर अनुभवों के आधार पर ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया बन जाती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 269-270)।

बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा में भाषा की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक अपनी मातृभाषा अथवा परिचित भाषा के माध्यम से गणितीय विचारों को अधिक सहजता से समझते और व्यक्त करते हैं। स्थानीय शब्दावली, परिचित उदाहरण तथा सांस्कृतिक संदर्भ गणितीय अधिगम को अधिक सार्थक बनाते हैं। इसी कारण रूपरेखा प्रारम्भिक वर्षों में मातृभाषा-आधारित शिक्षण, स्थानीय परिवेश तथा स्थानीय संसाधनों के उपयोग की अनुशंसा करती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277)। रूपरेखा में यह भी स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक बालक की अधिगम गति, रुचि तथा अनुभव भिन्न होते हैं। अतः गणित शिक्षण में समावेशी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। शिक्षक को ऐसी शिक्षण परिस्थितियाँ निर्मित करनी चाहिए जिनमें प्रत्येक बालक सहभागिता कर सके, प्रश्न पूछ सके, अपनी सोच व्यक्त कर सके तथा त्रुटियों से सीखने का अवसर प्राप्त कर सके। इस दृष्टिकोण में मूल्यांकन का उद्देश्य केवल उपलब्धि मापना नहीं, बल्कि अधिगम को समझना तथा उसमें निरंतर सुधार करना है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 278)।

वर्तमान समय में जब समाज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के दौर से गुजर रहा है, तब प्रारम्भिक अवस्था से ही तार्किक एवं गणितीय चिंतन का विकास और भी आवश्यक हो गया है। बुनियादी स्तर पर विकसित संख्या-बोध, स्थानिक समझ, तर्क तथा समस्या-समाधान की क्षमताएँ आगे चलकर उच्चतर गणितीय अधिगम तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की मजबूत आधारशिला बनती हैं। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा के समग्र उद्देश्यों से जोड़ते हुए इसे जीवनोपयोगी, आनंददायक, समावेशी तथा बालक-केंद्रित बनाने पर विशेष बल देती है।

इन्हीं संदर्भों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के परिप्रेक्ष्य में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्यों, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षक की भूमिका तथा मूल्यांकन संबंधी अनुशंसाओं का विश्लेषण किया गया है, ताकि यह समझा जा सके कि यह रूपरेखा प्रारम्भिक गणित शिक्षा को किस प्रकार अधिक प्रभावी, समावेशी तथा जीवनोपयोगी बनाने का प्रयास करती है।

अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में बुनियादी स्तर को बालकों के समग्र विकास की आधारशिला माना गया है। इस स्तर पर गणित शिक्षा का उद्देश्य केवल संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि संख्या-बोध, तार्किक चिंतन, प्रतिरूपों की पहचान तथा समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं का विकास करना है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268-278)। परंपरागत गणित शिक्षण प्रायः रटने एवं गणनात्मक अभ्यास तक सीमित रहा है, जबकि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 अनुभवात्मक, खेल-आधारित तथा बालक-केंद्रित शिक्षण पर बल देती है। ऐसे में यह अध्ययन बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं तथा मूल्यांकन संबंधी अनुशंसाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

यह अध्ययन शिक्षक-शिक्षकों, शोधार्थियों तथा प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकता है तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के परिप्रेक्ष्य में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के प्रमुख आयामों एवं शिक्षण-अधिगम रणनीतियों का विश्लेषण करना।
3. बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका एवं मूल्यांकन संबंधी अनुशंसाओं का अध्ययन करना।
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के आलोक में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक शोध उपागम पर आधारित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023*, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* तथा गणित शिक्षा से संबंधित पुस्तकों एवं शोध-पत्रों का दस्तावेजीय अध्ययन एवं विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। विशेष रूप से *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023* के भाग-ग, अध्याय-3 'गणित शिक्षा' (पृ. 268-293) का विश्लेषण करते हुए बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं, शिक्षण-अधिगम रणनीतियों, शिक्षक की भूमिका तथा मूल्यांकन संबंधी अनुशंसाओं का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं।

बुनियादी स्तर की अवधारणा एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में उसका स्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार शिक्षा की नवीन संरचना 5+3+3+4 अपनाई गई है, जिसमें बुनियादी स्तर प्रथम चरण है। इसमें 3 से 8 वर्ष आयु वर्ग के बालकों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें तीन वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (आंगनवाड़ी, बालवाटिका अथवा प्री-स्कूल) तथा कक्षा 1 एवं 2 शामिल हैं। यह अवस्था बालकों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी गई है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में स्पष्ट किया गया है कि इसी अवस्था में बालक अपने अनुभवों, खेलों, संवादों तथा परिवेश के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसलिए बुनियादी स्तर पर शिक्षण बालक-केंद्रित, गतिविधि-आधारित, अनुभवात्मक तथा आनंददायक होना चाहिए (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, भाग-ग, अध्याय-3, पृ. 268-269)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 गणित को केवल गणना अथवा संख्याओं तक सीमित विषय नहीं मानती, बल्कि इसे तर्क, प्रतिरूपों की पहचान, समस्या-समाधान तथा संसार को समझने का प्रभावी माध्यम स्वीकार करती है। रूपरेखा में स्पष्ट उल्लेख है कि गणित प्रकृति, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी तथा दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान है। अतः बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षा का उद्देश्य बालकों को केवल गणनात्मक दक्षता प्रदान करना नहीं, बल्कि उनमें गणितीय चिंतन एवं जिज्ञासा का विकास करना है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268)।

रूपरेखा के अनुसार बुनियादी स्तर के बालक प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। वे वस्तुओं को छूकर, गिनकर, मिलाकर, अलग करके, क्रमबद्ध करके तथा तुलना करके गणितीय अवधारणाओं का निर्माण करते हैं। इसलिए गणित शिक्षण को पुस्तकीय अभ्यास तक सीमित न रखकर स्थानीय परिवेश, खेल, कहानी, गीत, संवाद, चित्र, खिलौनों तथा ठोस शिक्षण-सामग्री से जोड़ने की अनुशंसा की गई है। इस प्रकार का शिक्षण बालकों की

जिज्ञासा को बनाए रखता है तथा उन्हें स्वयं खोजने, सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-277)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बुनियादी स्तर पर गणितीय अधिगम को भाषा से पृथक नहीं किया जा सकता। बालक अपनी मातृभाषा अथवा परिचित भाषा के माध्यम से गणितीय विचारों को अधिक सहजता से समझते और व्यक्त करते हैं। इसलिए शिक्षण के दौरान स्थानीय भाषा, स्थानीय उदाहरणों तथा सांस्कृतिक परिवेश का उपयोग करने पर बल दिया गया है। इससे गणित बालकों के जीवनानुभवों से जुड़ता है तथा उनकी सहभागिता में वृद्धि होती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277)।

रूपरेखा समावेशी शिक्षा के सिद्धांत को भी बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है। प्रत्येक बालक की अधिगम गति, रुचि, अनुभव तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न होती है। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह ऐसी शिक्षण परिस्थितियाँ निर्मित करे, जिनमें सभी बालकों को सीखने, प्रश्न पूछने, अपने विचार व्यक्त करने तथा गतिविधियों में भाग लेने का समान अवसर प्राप्त हो। गणित शिक्षण में विविध शिक्षण-सामग्री, सहयोगात्मक अधिगम तथा लचीली शिक्षण रणनीतियों का उपयोग इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक माना गया है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277-278)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के अनुसार बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का उद्देश्य भविष्य की गणितीय शिक्षा के लिए मजबूत आधार तैयार करना है। यदि बालकों में प्रारम्भिक अवस्था में संख्या-बोध, प्रतिरूपों की समझ, स्थानिक बोध, तार्किक चिंतन तथा समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं का समुचित विकास हो जाता है, तो आगे की कक्षाओं में गणितीय अवधारणाओं को समझना अधिक सरल एवं प्रभावी हो जाता है। इस प्रकार बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा संपूर्ण विद्यालयी गणित शिक्षा की आधारशिला के रूप में कार्य करती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268-278)।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को केवल विषयगत अधिगम के रूप में नहीं, बल्कि बालकों के समग्र बौद्धिक विकास, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता तथा जीवनोपयोगी कौशलों के विकास के आधार के रूप में देखती है। यही दृष्टिकोण इस रूपरेखा को पारंपरिक गणित शिक्षण से भिन्न एवं अधिक बालक-केंद्रित बनाता है।

बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षा के उद्देश्य एवं प्रमुख आयाम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का उद्देश्य बालकों को केवल संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनमें गणितीय चिंतन, तार्किकता, जिज्ञासा, समस्या-समाधान तथा दैनिक जीवन में गणितीय अवधारणाओं के उपयोग की क्षमता का विकास करना है। रूपरेखा में गणित को ऐसी बौद्धिक गतिविधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से बालक अपने परिवेश में उपस्थित प्रतिरूपों को पहचानते हैं, उनके बीच संबंध स्थापित करते हैं तथा तर्कसंगत निष्कर्ष निकालना सीखते हैं। इस प्रकार गणित शिक्षा का लक्ष्य बालकों को केवल उत्तर तक पहुँचाना नहीं, बल्कि उत्तर तक पहुँचने की प्रक्रिया को समझने योग्य बनाना है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, भाग-ग, अध्याय-3, पृ. 268-269)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार बुनियादी स्तर पर गणितीय अधिगम का प्रथम उद्देश्य संख्या-बोध का विकास करना है। संख्या-बोध केवल संख्याओं की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि मात्रा की समझ, वस्तुओं की गिनती, संख्याओं की तुलना, क्रम तथा संख्याओं के परस्पर संबंधों को समझने की क्षमता से संबंधित है। जब बालक दैनिक जीवन की वस्तुओं की गिनती करते हैं, खिलौनों का विभाजन करते हैं अथवा समूह बनाते हैं, तब वे स्वाभाविक रूप से संख्या संबंधी अवधारणाओं का निर्माण करते हैं। रूपरेखा इस प्रकार के अनुभवों को गणित शिक्षण का आधार बनाने की अनुशंसा करती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-277)।

बुनियादी स्तर पर प्रतिरूपों की पहचान एवं निर्माण भी गणितीय अधिगम का महत्त्वपूर्ण आयाम है। बालक रंगों, आकृतियों, ध्वनियों, गतिविधियों तथा संख्याओं में उपस्थित नियमितताओं को पहचानते हुए क्रम, पुनरावृत्ति तथा संबंधों को समझना प्रारम्भ करते हैं। प्रतिरूपों की पहचान से उनमें तार्किक चिंतन तथा भविष्यवाणी करने की क्षमता का विकास होता है। इसलिए रूपरेखा विविध खेलों, चित्रों, स्थानीय सामग्रियों तथा गतिविधियों के माध्यम से प्रतिरूपों का अनुभव कराने पर बल देती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277)।

रूपरेखा में वर्गीकरण तथा क्रमबद्धता को भी प्रारम्भिक गणितीय विकास का आवश्यक घटक माना गया है। बालक आकार, रंग, आकृति, उपयोग अथवा अन्य विशेषताओं के आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण करना तथा उन्हें छोटे-बड़े, हल्के-भारी अथवा कम-अधिक के क्रम में व्यवस्थित करना सीखते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ उनकी तुलना करने, समानताओं एवं भिन्नताओं को पहचानने तथा तार्किक निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करती हैं। इसलिए गणित शिक्षण में ऐसी गतिविधियों का समावेश आवश्यक माना गया है जो बालकों को स्वयं वर्गीकरण एवं क्रमबद्धता का अनुभव कराएँ (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-278)।

बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा में स्थानिक बोध तथा प्रारम्भिक मापन का भी विशेष महत्त्व है। बालक अपने परिवेश में वस्तुओं की स्थिति, दिशा, दूरी, आकार तथा माप का अनुभव करते हुए स्थानिक संबंधों को समझते हैं। खेल, चित्र,

निर्माणात्मक गतिविधियाँ तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियाँ उन्हें इन अवधारणाओं को सहज रूप से ग्रहण करने में सहायता प्रदान करती हैं। इसी प्रकार लंबा-छोटा, भारी-हल्का, अधिक-कम तथा निकट-दूर जैसी अवधारणाएँ भी अनुभवात्मक गतिविधियों के माध्यम से विकसित की जाती हैं (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277-278)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 इस बात पर विशेष बल देती है कि बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षा का प्रत्येक उद्देश्य बालक के अनुभवों, खेलों, संवाद तथा स्थानीय परिवेश से जुड़ा होना चाहिए। गणितीय अवधारणाओं का निर्माण तभी प्रभावी होता है जब बालक स्वयं गतिविधियों में भाग लेते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपने विचार व्यक्त करते हैं तथा विभिन्न समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार गणित शिक्षा ज्ञानार्जन की निष्क्रिय प्रक्रिया न होकर सक्रिय, सहभागी तथा आनंददायक अधिगम अनुभव बन जाती है।

अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का उद्देश्य केवल गणनात्मक दक्षता विकसित करना नहीं, बल्कि बालकों में तार्किक चिंतन, गणितीय जिज्ञासा, समस्या-समाधान क्षमता तथा जीवनोपयोगी गणितीय समझ का विकास करना है। यही उद्देश्य आगे की विद्यालयी गणित शिक्षा के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार करते हैं।

बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षण-अधिगम की रणनीतियाँ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षण को बालक-केंद्रित, अनुभवात्मक, खेल-आधारित तथा अन्वेषणपरक बनाने पर विशेष बल दिया गया है। रूपरेखा के अनुसार इस स्तर पर बालक प्रत्यक्ष अनुभवों, गतिविधियों तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। इसलिए गणित शिक्षण का उद्देश्य केवल गणितीय तथ्यों का संप्रेषण करना नहीं, बल्कि ऐसी अधिगम परिस्थितियाँ निर्मित करना है जिनमें बालक स्वयं खोजें, विचार करें, प्रश्न पूछें तथा अपने अनुभवों के आधार पर गणितीय अवधारणाओं का निर्माण करें (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, भाग-ग, अध्याय-3, अनुभाग-3.4.1.5, पृ. 276-278)।

रूपरेखा में खेल-आधारित शिक्षण को बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का प्रमुख आधार माना गया है। बालक खेलते हुए सहज रूप से गिनती करना, वस्तुओं की तुलना करना, समूह बनाना, क्रमबद्ध करना तथा प्रतिरूपों की पहचान करना सीखते हैं। खेलों के माध्यम से गणितीय अवधारणाएँ बालकों के लिए रोचक एवं अर्थपूर्ण बन जाती हैं। उदाहरण के लिए, गेंद, गोटियाँ, ब्लॉक, पत्तियाँ, बीज, कंकड़ अथवा अन्य स्थानीय सामग्रियों के माध्यम से संख्या-बोध, जोड़, घटाव तथा वर्गीकरण जैसी अवधारणाओं का विकास सरलता से किया जा सकता है। इस प्रकार गणित शिक्षण भयमुक्त एवं आनंददायक बनता है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-277)।

अनुभवात्मक अधिगम भी रूपरेखा की प्रमुख शिक्षण रणनीति है। बालकों को केवल तैयार नियम बताने के स्थान पर उन्हें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का अवलोकन करने, वस्तुओं को छूने, गिनने, मापने, व्यवस्थित करने तथा उनके बीच संबंध खोजने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। जब बालक स्वयं अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं, तब उनका अधिगम अधिक स्थायी एवं अर्थपूर्ण होता है। रूपरेखा इस प्रकार के अनुभवों को गणितीय अवधारणाओं के निर्माण का आधार मानती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 268-269)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में स्थानीय परिवेश एवं स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर विशेष बल दिया गया है। विद्यालय एवं समुदाय में उपलब्ध प्राकृतिक एवं स्थानीय सामग्री-जैसे बीज, पत्तियाँ, लकड़ी के टुकड़े, मिट्टी के खिलौने, रस्सी, पत्थर, बोतल के ढक्कन तथा अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ-गणित शिक्षण को जीवन से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इससे बालक यह समझते हैं कि गणित केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277)।

रूपरेखा के अनुसार मातृभाषा अथवा परिचित भाषा गणितीय अधिगम का प्रभावी माध्यम है। प्रारम्भिक वर्षों में बालक अपनी भाषा में गणितीय विचारों को अधिक सहजता से समझते, व्यक्त करते तथा दूसरों के साथ साझा करते हैं। इसलिए शिक्षक को स्थानीय शब्दावली, परिचित उदाहरणों तथा दैनिक जीवन की घटनाओं का उपयोग करते हुए गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करना चाहिए। इससे बालकों की सहभागिता बढ़ती है तथा गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277)।

बुनियादी स्तर पर सहभागी एवं सहयोगात्मक अधिगम को भी विशेष महत्त्व दिया गया है। रूपरेखा के अनुसार बालकों को छोटे समूहों में कार्य करने, चर्चा करने, अपने विचार व्यक्त करने तथा विभिन्न समाधान प्रस्तुत करने के अवसर मिलने चाहिए। इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल गणितीय समझ को विकसित करती हैं, बल्कि सहयोग, संवाद, आत्मविश्वास तथा सामाजिक कौशलों का भी विकास करती हैं। शिक्षक को ऐसी कक्षा-संस्कृति विकसित करनी चाहिए जिसमें प्रत्येक बालक सक्रिय रूप से भाग ले सके तथा त्रुटियों को सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाए (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277-278)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह भी स्पष्ट करती है कि गणित शिक्षण में ठोस शिक्षण-सामग्री से अमूर्त अवधारणाओं की ओर क्रमिक प्रगति होनी चाहिए। प्रारम्भिक अवस्था में बालक वास्तविक वस्तुओं एवं अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। इसलिए पहले उन्हें वस्तुओं के साथ कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिए, तत्पश्चात चित्रों, प्रतीकों तथा संख्यात्मक संकेतों के माध्यम से अवधारणाओं को विकसित किया जाना

चाहिए। यह प्रक्रिया गणितीय समझ को अधिक स्थायी एवं गहन बनाती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-278)।

इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षण को रटने एवं यांत्रिक अभ्यास से मुक्त कर अनुभव, खेल, संवाद, स्थानीय परिवेश, मातृभाषा तथा सक्रिय सहभागिता पर आधारित बनाने की अनुशंसा करती है। ऐसी शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ बालकों में गणित के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, तार्किक चिंतन तथा समस्या-समाधान क्षमता का विकास करती हैं और आगे की गणितीय शिक्षा के लिए सुदृढ़ आधार तैयार करती हैं।

बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका एवं मूल्यांकन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में शिक्षक को ज्ञान का मात्र संप्रेषक न मानकर अधिगम प्रक्रिया का मार्गदर्शक, सह-अध्येता तथा अधिगम-सुविधाकर्ता माना गया है। बुनियादी स्तर पर बालकों का अधिगम प्रत्यक्ष अनुभवों, खेलों, संवाद तथा गतिविधियों के माध्यम से होता है। इसलिए शिक्षक की भूमिका ऐसी शिक्षण परिस्थितियाँ निर्मित करने की है, जिनमें प्रत्येक बालक सक्रिय रूप से सहभागिता कर सके, अपने अनुभव साझा कर सके तथा गणितीय अवधारणाओं का निर्माण स्वयं कर सके। शिक्षक को बालकों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें प्रश्न पूछने, अनुमान लगाने, तर्क प्रस्तुत करने तथा विभिन्न समाधान खोजने के अवसर प्रदान करने चाहिए (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, भाग-ग, अध्याय-3, अनुभाग-3.4.1.5, पृ. 276-278)।

रूपरेखा के अनुसार बुनियादी स्तर पर गणित शिक्षण बालकों के पूर्व अनुभवों एवं स्थानीय परिवेश से जुड़ा होना चाहिए। शिक्षक को शिक्षण के दौरान स्थानीय संसाधनों, दैनिक जीवन की परिस्थितियों तथा परिचित वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए, जिससे गणितीय अवधारणाएँ बालकों के लिए सहज एवं अर्थपूर्ण बन सकें। बीज, कंकड़, पत्तियाँ, खिलौने, लकड़ी के टुकड़े, बोतल के ढक्कन तथा अन्य स्थानीय सामग्री का उपयोग संख्या-बोध, वर्गीकरण, प्रतिरूप, मापन तथा स्थानिक बोध जैसी अवधारणाओं के विकास में प्रभावी सिद्ध हो सकता है। इससे बालकों में गणित के प्रति रुचि तथा आत्मविश्वास दोनों विकसित होते हैं (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 276-277)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 प्रारम्भिक वर्षों में मातृभाषा अथवा परिचित भाषा के प्रयोग को भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानती है। शिक्षक को गणितीय अवधारणाओं को समझाने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसे बालक सहज रूप से समझ सकें। स्थानीय उदाहरण, कहानियाँ, गीत, संवाद तथा प्रश्नोत्तर की प्रक्रिया गणितीय अधिगम को अधिक प्रभावी बनाती है। साथ ही शिक्षक को प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत अधिगम गति, रुचि

एवं आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए समावेशी शिक्षण वातावरण तैयार करना चाहिए, जिससे सभी बालकों को समान रूप से सीखने के अवसर प्राप्त हों (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 277-278)।

बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा भी पारंपरिक परीक्षा-केन्द्रित दृष्टिकोण से भिन्न है। रूपरेखा के अनुसार मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह जानना नहीं है कि बालक कितना सीख चुका है, बल्कि यह समझना भी है कि वह कैसे सीख रहा है, किन क्षेत्रों में उसे सहायता की आवश्यकता है तथा उसके अधिगम को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को कौन-सी शिक्षण रणनीतियाँ अपनानी चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन को अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना गया है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 278)।

रूपरेखा में सतत् एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षक को बालकों की दैनिक गतिविधियों, खेलों, समूह कार्यों, संवाद, मौखिक अभिव्यक्ति तथा समस्या-समाधान की प्रक्रियाओं का निरंतर अवलोकन करना चाहिए। इस प्रकार का मूल्यांकन बालकों की वास्तविक गणितीय समझ, तार्किक चिंतन तथा अवधारणात्मक विकास का अधिक प्रभावी आकलन करता है। साथ ही यह बालकों में परीक्षा का भय उत्पन्न किए बिना उनके अधिगम में सुधार के अवसर प्रदान करता है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, पृ. 278)।

अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 में शिक्षक एवं मूल्यांकन दोनों को बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा का केंद्रीय आधार माना गया है। एक संवेदनशील, प्रशिक्षित एवं नवाचारी शिक्षक तथा सतत्, बालक-केंद्रित एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन व्यवस्था ही गणित शिक्षा को आनंददायक, समावेशी तथा प्रभावी बना सकती है। यही दृष्टिकोण बालकों में प्रारम्भिक गणितीय क्षमताओं के विकास के साथ-साथ उनके समग्र बौद्धिक एवं तार्किक विकास को भी सुनिश्चित करता है।

बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ एवं सुझाव

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को बालक-केंद्रित, अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित एवं समावेशी बनाने पर बल देती है। यद्यपि यह दृष्टिकोण भारतीय विद्यालयी शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रगतिशील है, तथापि इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना रूपरेखा के उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति संभव नहीं है।

1. शिक्षकों को गतिविधि-आधारित, खेल-आधारित तथा अनुभवात्मक गणित शिक्षण का पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होने के कारण राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षण का प्रभावी क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण है।

2. अनेक विद्यालयों में गणित शिक्षण के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री, स्थानीय संसाधनों तथा उपयुक्त अधिगम वातावरण का अभाव पाया जाता है, जिससे अनुभवात्मक अधिगम प्रभावित होता है।

3. बड़ी एवं विविध अधिगम आवश्यकताओं वाली कक्षाओं में प्रत्येक बालक की सीखने की गति, रुचि तथा आवश्यकता के अनुसार शिक्षण करना शिक्षक के लिए कठिन हो जाता है।

4. विद्यालयों में अभी भी परीक्षा एवं अंक-आधारित मूल्यांकन को अधिक महत्त्व दिया जाता है, जबकि बुनियादी स्तर पर सतत् एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन की आवश्यकता है।

5. अनेक विद्यालयों में मातृभाषा, स्थानीय परिवेश तथा दैनिक जीवन के अनुभवों का गणित शिक्षण में अपेक्षित स्तर पर उपयोग नहीं हो पाता, जिससे गणितीय अवधारणाएँ बालकों के लिए कम अर्थपूर्ण बनती हैं।

6. डिजिटल संसाधनों तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण तकनीकों का सीमित उपयोग भी प्रभावी गणित शिक्षण में बाधा उत्पन्न करता है। अनेक विद्यालयों में शिक्षकों को प्रौद्योगिकी-सहायित शिक्षण के लिए आवश्यक प्रशिक्षण एवं संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

7. शिक्षकों के नियमित व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे बालक-केंद्रित, गतिविधि-आधारित तथा अनुभवात्मक शिक्षण रणनीतियों का प्रभावी उपयोग कर सकें।

8. विद्यालयों में स्थानीय एवं कम लागत वाली शिक्षण-अधिगम सामग्री के निर्माण और उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि गणित को बालकों के जीवनानुभवों से जोड़ा जा सके।

9. कक्षा में समावेशी, सहभागितापूर्ण तथा भयमुक्त अधिगम वातावरण विकसित किया जाना चाहिए, जिससे प्रत्येक बालक सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सके और अपनी गणितीय सोच को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सके।

10. गणित शिक्षा में सतत् एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन को अपनाते हुए अवलोकन, गतिविधियों, परियोजना कार्य, मौखिक अभिव्यक्ति तथा संवाद आधारित आकलन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

11. अभिभावकों एवं समुदाय की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि विद्यालय और घर दोनों स्तरों पर बालकों को गिनती, मापन, तुलना, वर्गीकरण तथा समस्या-समाधान जैसे वास्तविक गणितीय अनुभव प्राप्त हो सकें।

12. विद्यालयों को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के अनुरूप आवश्यक शैक्षणिक संसाधन, प्रशासनिक सहयोग तथा निरंतर शैक्षणिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाना चाहिए, जिससे बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के उद्देश्यों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके।

अतः यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त चुनौतियों का योजनाबद्ध समाधान तथा सुझाए गए उपायों का प्रभावी क्रियान्वयन बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, आनंददायक एवं जीवनोपयोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के उद्देश्य व्यावहारिक रूप से साकार होंगे तथा बालकों में प्रारम्भिक गणितीय दक्षताओं के साथ तार्किक एवं रचनात्मक चिंतन का भी समुचित विकास संभव होगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा के लिए एक समग्र, बालक-केंद्रित एवं अनुभवात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह रूपरेखा गणित को केवल संख्याओं एवं गणनाओं का विषय न मानकर तार्किक चिंतन, प्रतिरूपों की पहचान, समस्या-समाधान, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों को समझने का प्रभावी माध्यम मानती है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 2023, भाग-ग, अध्याय-3, पृ. 268-278)। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि बुनियादी स्तर पर गणितीय अधिगम को बालकों के अनुभवों, खेल, गतिविधियों, स्थानीय परिवेश तथा मातृभाषा से जोड़ने पर उनकी अवधारणात्मक समझ अधिक सुदृढ़ होती है। इस स्तर पर संख्या-बोध, प्रतिरूपों की पहचान, वर्गीकरण, स्थानिक बोध तथा समस्या-समाधान जैसी आधारभूत क्षमताओं का विकास आगे की गणितीय शिक्षा के लिए मजबूत आधार तैयार करता है। इसलिए गणित शिक्षण को रटने एवं यांत्रिक अभ्यास तक सीमित रखने के स्थान पर सक्रिय सहभागिता, अन्वेषण तथा अनुभवात्मक अधिगम पर आधारित बनाया जाना आवश्यक है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानती है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि अधिगम का मार्गदर्शक, प्रेरक एवं सुविधाकर्ता है। इसी प्रकार सतत् एवं विकासोन्मुख मूल्यांकन, समावेशी कक्षा-परिवेश, स्थानीय शिक्षण-सामग्री तथा बालकों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ गणित शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं अर्थपूर्ण बनाती हैं। यद्यपि इस रूपरेखा के सफल क्रियान्वयन के लिए प्रशिक्षित शिक्षक, पर्याप्त शिक्षण-संसाधन, विद्यालयों में अनुकूल अधिगम वातावरण तथा सतत् शैक्षणिक सहयोग आवश्यक है, फिर भी इसके सिद्धांत भारतीय विद्यालयी गणित शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी तथा जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 बुनियादी स्तर की गणित शिक्षा को नई दिशा एवं स्पष्ट दृष्टि प्रदान करती है। यदि इसके सिद्धांतों एवं अनुशंसाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, तो बालकों में आधारभूत गणितीय समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान क्षमता का समुचित विकास होगा। साथ ही, यह भविष्य की विद्यालयी गणित शिक्षा को अधिक सुदृढ़, अर्थपूर्ण तथा जीवनोपयोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

संदर्भ

- कनगुजिया, आर. एवं वर्मा, एम. (2026), भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023 का विश्लेषणात्मक अध्ययन, *अधिगम,* 38(-), 7-18.
- कुमार, ज. (2026), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा 2023 के संदर्भ में वैदिक गणित आधारित शिक्षण की भूमिका, *मल्टीडिसिप्लिनरी थॉट्स इन द मॉडर्न एजुकेशनल एनवायरनमेंट: रिसर्च, इनोवेशन, एंड फ्यूचर,* 50-59.
- गुप्ता, आर. एवं गंगवार, एस. (2024), समावेशी शिक्षा तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 : एक विमर्श, *प्राथमिक शिक्षक,* 48(04), 78-90.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2023). *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*। नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद। https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf
- शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*। भारत सरकार, नई दिल्ली। https://www.education.gov.in/
- शिक्षा मंत्रालय. (2022). *समग्र शिक्षा: विद्यालयी शिक्षा हेतु एकीकृत योजना-क्रियान्वयन रूपरेखा*। भारत सरकार, नई दिल्ली। https://samagra.education.gov.in/